



HINDI B – HIGHER LEVEL – PAPER 1
HINDI B – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1
HINDI B – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1

Friday 21 May 2010 (afternoon)
Vendredi 21 mai 2010 (après-midi)
Viernes 21 de mayo de 2010 (tarde)

1 h 30 m

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1.
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'Épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

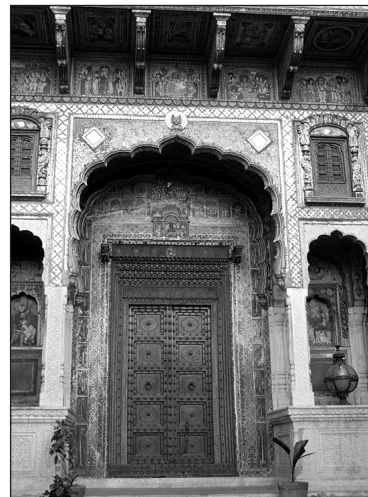
CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la Prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

पाठांश क:

आकर्षक रंग बिरंगी हवेलियाँ

- 1 ① डुंडलोद स्थित गोयनका हवेली खुर्रदार हवेली के नाम से प्रसिद्ध है। स्थापत्य का अप्रतिम उदाहरण यह हवेली जिसका निर्माण उद्योग कर्मी अर्जन दास गोयनका द्वारा करवाया गया था। वह अपने समय के सुविज्ञ और दूरदर्शी थे। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े होने के बावजूद वे लोक रंग, लोकरीति और लोक कलाओं के संरक्षण के प्रबल इच्छुक थे और इसलिए उन्होंने अपनी इस विशालकाय चौक की हवेली के बाहर दो बैठकें, आकर्षक द्वार और भीतर सोलह कक्षों का निर्माण करवाया था। जिनके भीतर कोठरियों, दुछतियों, खूटियों, कड़ियों की पर्याप्त व्यवस्था रखी गई थी। उन्हें प्राचीन दुर्लभ ग्रंथों, आकर्षक बर्तनों, झाड़-फ़ानूस, आदमकद शीशों और औषधियों के लिए सुंदर बोटलों को एकत्रित करने का शहंशाही शौक था।
- 5 ② उनके वंशज मोहन गोयनका ने सन् 1950 में हवेली के कुछ कमरे खोल कर देखे थे जिन्हें 2004 में फिर से खोल दिया गया है। भीतर से पूरी तरह चित्रांकित इस हवेली को नया रूप देने का कार्य 2000 में ही शुरू कर दिया था। उन्होंने यह सोचते हुए कि शेखावटी में कलात्मक और दुर्लभ वस्तुओं के प्रदर्शन का कोई संग्रहालय नहीं है, इस हवेली को एक अतुलनीय संग्रहालय बनाने का निर्णय लिया। इस घुमावदार खुर्र की हवेली का भीतरी हिस्सा लोक चित्रों से भरा पूरा है जिनमें श्रीकृष्णकालीन लीलाओं के चित्रों की बहुतायत है।
- 10 ③ फतेहपुर में नंदलाल डेबडा की हवेली, कन्हैयालाल गोयनका की हवेली, नेमी चंद चौधरी की हवेली और सिंघानियों की हवेली ऐसी इमारतें हैं जिन्हें देखना पर्यटक पसंद करते हैं। महनसर में सेजराम पोद्दार की हवेली की सोने-चांदी की दुकान, पोद्दारों की छतरियां और गढ भव्य इमारतें हैं तो बिसाऊ में सीताराम सिंगतिया की हवेली और पोद्दारों की हवेली का कोई जवाब नहीं है।
- 15 ④ रामगढ शेखावाटी में राम गोपाल पोद्दार की छतरी में राम कालीन कथा चित्रांकित है, घनश्याम दास पोद्दार की हवेली आकर्षक और कलात्मक है तो ताराचंद रूइया और रामनारायण खेमका हवेली के अपने आकर्षण हैं। झुंझुनूं में टीबडे वालों की हवेली और ईसरदास मोदी की सैकड़ों खिड़कियों वाली भव्य हवेलियां हैं। मंडावा में सागरमल लडिया की हवेली, रामदेव चौखानी की हवेली मोहनलाल नेवटिया की हवेली रामनाथ गोयनका की हवेली हरी प्रसाद ढेंढारिया की हवेली ओर बुधमल मोहनलाल की भी दर्शनीय है। चूडी में शिवप्रसाद नेमाणी की हवेली भी कलात्मकता का परिचय देती है जहां शिवालय की छतरी में श्रीकृष्ण कालीन रासलीलाएं संगमरमरी पत्थरों पर अंकित हैं। चूरू में भी मालजी का कमरा, सुराणों का हवामहल, रामविलास गोयनका की हवेली, मंत्रियों की बड़ी हवेली और कन्हैयालाल बागला की हवेली दर्शनीय है।
- 20



पाठांश ख:

भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर और विश्वजाल का विकास

यूनेस्को की व्याख्या के अनुसार सूचना प्रौद्योगिकी एक शास्त्रीय, तकनीकी, प्रबंधकीय एवं अभियांत्रिकी शाखा है, जो सूचनाओं के तंत्र को विकसित करके उसका प्रयोग कंप्यूटर के माध्यम से करते हुए मानव और मशीन के बीच सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को सुदृढ़ और सबल बनाती है।

5 भारत एक बहु भाषिक देश है। भारतीय संविधान में राजभाषा हिंदी सहित कुल 18 भाषाओं को स्थान प्राप्त हुआ है। भाषावार प्रांत रचना के फलस्वरूप विभिन्न प्रांतों में अलग-अलग भाषाओं का प्रचलन बढ़ गया है। विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच हिंदी भाषा एक पुल हैं जिसके सहारे विभिन्न भारतीय भाषाओं में समन्वय निर्माण किया गया है। देश के अधिकांश भागों में धर्म, व्यापार, पर्यटन के क्षेत्र में हिंदी भाषा का समुचित प्रयोग किया जाता है।

10 1947 में ट्रांज़िस्टर, 1971 में माइक्रोप्रोसेसर के विकास से कंप्यूटर का आकार छोटा और गणना शक्ति विशाल हो गई है। छोटे और अधिक शक्तिशाली कंप्यूटर के द्वारा व्यापार, शिक्षा, कार्यालय आदि अनेक क्षेत्रों में तेज़ी से विकास हुआ है। कंप्यूटर में हिंदी प्रयोग की बढ़ती संभावनाओं को ध्यान में रखकर इलेक्ट्रॉनिकी विभाग ने "भारतीय भाषाओं के लिए टेक्नॉलॉजी विकास" नामक परियोजना के अंतर्गत कई प्रोजेक्ट शुरू किए हैं। संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए सभी सरकारी अर्ध सरकारी, सरकारी उद्यमों में हिंदी भाषा का प्रयोग अनिवार्य किया गया है। किसी भी प्रजातंत्र में सरकारी अथवा निजी संघठन में जन भाषा का सम्मान करना फलप्रद होता है। सरकारी कामकाज में पारदर्शिता लाने के लिए सूचनाओं का माध्यम जनभाषा होना ज़रूरी है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेज़ी, मंडारिन, फ्रांसीसी, जापानी, अरबी, स्पेनिश आदि भाषाएँ कंप्यूटर क्षेत्र में काफी आगे बढ़ गई हैं साथ ही इनका प्रयोग भी। दुर्भाग्य से भारत में कंप्यूटर पर भारतीय भाषाओं का प्रचार-प्रसार बहुत धीमी गति से हुआ है। आज हम दूरदर्शन पर जापानी या चीनी शेयर बाज़ार का दृश्य देखते हैं तब यह मालूम होता है कि वहाँ के सभी बोर्ड, सूचनाएँ जापानी या चीनी भाषा में प्रदर्शित होते हैं। हमारे देश में शेयर बाज़ार का दृश्य कुछ अलग होता है। आम भारतीय निवेशक अपनी पूँजी भारतीय अथवा विदेशी कंपनियों के शेयरों में केवल अंग्रेज़ी भाषा में उपलब्ध प्रपत्र में ही प्रस्तुत करने के लिए विवश है। भाषाओं की इस असुविधा को हटाना ज़रूरी है। आर्थिक उदारीकरण के तहत भारत के बाज़ार विदेशी कंपनियों के लिए खोले जा रहे हैं। विदेशी कंपनियाँ भारतीय उपभोक्ताओं को आकर्षित करने हेतु भारतीय भाषाओं का बखूबी प्रयोग कर रही हैं।



पाठांश ग:

गद्दार

सुदामा बाबू की मनमोहक बातों में लोगों को रस आने लगा था। जब भी उनका भाषण होता, लोग टिड्डी की तरह टूट पड़ते। सुदामा बाबू भी खूब चिकनी-चुपड़ी बातें करते। जब भी उन लोगों के बीच जात-बिरादरी के पिछड़ेपन की बात करते, कहते-"भाईयों! हमारी संख्या लाखों में है फिर भी हम सत्ता से बाहर ही रह जाते हैं। सत्ता में जब तक हमारी भागीदारी नहीं होगी, तब तक हम लोग पिछड़े ही रहेंगे।"

5

लोग तालियाँ बजा-बजाकर उनका स्वागत करते। सुदामा बाबू का हौसला बढ़ता जा रहा था। वे भोले-भाले लोगों को कभी जात के नाम पर, तो कभी पाँत के नाम पर ठगते। और नहीं तो उनसे अपनी गरीबी का रोना रोते और उसके नाम पर रुपये-दो-रुपये तक का चन्दा भी लेते। लोगों को लगता सुदामा बाबू उनके मसीहा हैं। और सुदामा बाबू भी लोगों का भावनात्मक शोषण करने से नहीं चूकते थे। पहली बार सुदामा बाबू प्रखंड प्रमुख के रूप में चुने गए तो बिरादरी के लोगों को लगा जैसे अयोध्या का राज मिल गया है।

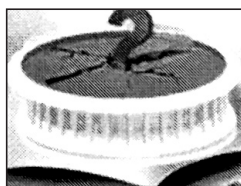
10

पहला झटका उन्हें तब लगा जब उनका स्वागत समारोह ठाकुर गजराज सिंह के यहाँ किया गया। उन लोगों की स्थिति वही रही, जो पहले थी। सारे लोग गुस्से में थे किन्तु चुप ही रहे। समारोह के बाद सुदामा बाबू सब लोगों के घर गये और उनका आशीर्वाद माँगा। लोगों ने मन की रंजिश निकाल कर उन्हें आशीर्वाद दे भी दिया। सुदामा बाबू का रंग धीरे-धीरे निखरने लगा था। पहले पैदल चलते थे। प्रमुख बनते ही डीजल जीप दरवाजे पर आकर खड़ी हो गयी। बच्चे जीप को देखकर खुश होते। उसे छूकर देखते। बूढ़े भी गद्-गद् थे। कम-से-कम अपने बीच का एक आदमी तो ऊपर गया। लोग अपनी समस्याएँ लेकर सुदामा बाबू के यहाँ जाते और निराश वापस लौटते।

15

सुदामा बाबू कभी-कभी झल्ला कर ड्राइवर को डाँटते -"देखते नहीं जिसका मन होता है ऊँट की तरह मुँह उठाए चला आता है। भगाओ इन भुख्खड़ों को। लगता है यहाँ खैरात बँट रही है।" "सर! यही लोग तो हमारी जान हैं। इन्हें अनदेखा मत कीजिए।" किसी चमचे ने कहा। "अरे बेवकूफ! इस तरह से नेतागिरी नहीं चलती। मैं महात्मा थोड़े हूँ कि सब लोग दौड़े चले आते हैं आशीर्वाद के लिए। उनको कहो अब तो भगवान भी बिना चढ़ावे के खुश नहीं होते।" चमचा सुदामा बाबू के पान से रंगे होठों से झाँकती मुस्कराहट को देख रहा था। उसे लग रहा था जैसे उनके होठों पर पान की पीक नहीं बल्कि उन जैसे कमजोर लोगों का खून पसर गया हो।

25



पाठांश घ:

क्या यह फिल्मों का असर है?

एक अध्ययन के अनुसार बच्चों में धूम्रपान की आदत के पीछे फिल्मों का बड़ा हाथ है। सिनेमा के परदे पर अपने पसंदीदा नायक को सिगरेट सुलगाते देखकर बच्चे भी ऐसा करने को प्रेरित हो जाते हैं। इसके बाद उन्हें धूम्रपान की आदत-सी हो जाती है। एक अध्ययन में इस बात का खुलासा किया गया है और सलाह दी गई है कि फिल्मों में धूम्रपान के दृश्यों को प्रतिबंधित कर देना चाहिए। इस अध्ययन से यह तथ्य सामने आया है कि बच्चों में धूम्रपान की आदत के पीछे फिल्मों का बड़ा हाथ होता है। अध्ययन के अनुसार फिल्मों का असर बचपन में ही पड़ जाता है। प्रमुख अध्ययनकर्ता डा. लिंडा टाइटस-ईर्नस्टोफ ने कहा, 'धूम्रपान तक पहुंचने की प्रक्रिया बचपन में ही शुरू हो जाती है। फिल्में भी इसके लिए जिम्मेदार होती हैं। परदे पर धूम्रपान के दृश्य देखने वालों में भी इसकी लत लगने की आशंका होती है।' लिंडा के अनुसार बच्चों व किशोरों के लिए बनाई गई फिल्मों में भी धूम्रपान के दृश्य होते हैं। ये बुरा असर डाल सकते हैं। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए अभिभावकों को सतर्क रहना चाहिए।

दूसरी तरफ अभिनय जगत के लोग इस राय से सहमत नहीं हैं। उनके अनुसार फिल्मों का जगत एक काल्पनिक जगत है और यदि किसी तरह की पाबंदी फिल्मों पर लादी जाए तो कला की स्वतंत्रता पर प्रहार माना जाएगा। अक्सर अभिनेता और अभिनेत्री मानते हैं कि समाज में होने वाली बुराइयों के लिए फिल्में ही दोषी होती है जो सही नहीं है। कई बार फिल्मी कलाकार ऐसे तर्क देते हैं कि फिल्म निर्माण के पहले भी लोग धूम्रपान करते थे। तब वह लोग किन बातों से प्रेरित होते थे। इसलिए यह कहना कि फिल्मों में अपने मनपसंद अभिनेता को देखकर बच्चे सिगरेट पीने के लिए प्रेरित होते हैं यह सही नहीं है।

इसप्रकार एक ओर कला और उसकी कल्पना शक्ति के अस्तित्व का प्रश्न है तो दूसरी तरफ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बचाए रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। प्रश्न उठता है कि क्या फिल्म माध्यम से जुड़े लोग नायक या महानायक बनने की होड़ में किसी भी तरह के चरित्र करते रहेंगे या फिर समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएँगे।

